मई 2026, वर्ष - 01, अंक - 05

मेधा

E-Magzine (Monthly)

स्वप्न, सृजन और सम्भावनाओं की पत्रिका

आवरण चित्र : सुइता मण्डल, बी.ए. षष्ठम सेमेस्टर

संरक्षक/प्राचार्य
प्रो. अवधेश नारायण सिंह

सम्पादक
डॉ. राजेश कुमार सिंह

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रुद्रपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

मई 2026, वर्ष - 01, अंक - 05

मेधा

E-Magzine (Monthly)

स्वप्न,सृजन और सम्भावनाओं की पत्रिका

संरक्षक/प्राचार्य

प्रो. अवधेश नारायण सिंह

सम्पादक

डॉ. राजेश कुमार सिंह

युवा सम्पादक मण्डल

****

सहायक सम्पादक

तनीशा चावला
नेपोलियन

साहित्य सम्पादक

अनामिका सिंह
शुवांशु बिष्ट
कैलाश चौधरी

समाचार सम्पादक

सालेहा खातून
दिया टाकुली
कुमकुम मिश्रा

क्रीड़ा सम्पादक

सरिता बिष्ट

कला सम्पादक

सुइता मण्डल

मई 2026, वर्ष -01, अंक -05

मेधा

E-Magzine (Monthly)
स्वप्न,सृजन और सम्भावनाओं की पत्रिका

भीतर के पन्नों में

****

01- प्राचार्य का संदेश पृष्ठ संख्या: 04
02- सम्पादक की कलम से पृष्ठ संख्या: 05-06
03- Mental Health - Shuvanshu Bisht पृष्ठ संख्या: 07-09
04- Dowery didn't die, It just learned sophisticated language- Anamika Singh पृष्ठ संख्या:10-12
05- College Life: The best phase of life - Pooja Pathak पृष्ठ संख्या:13-14
06- Algorithm's toll on youth - Anisha Jha पृष्ठ संख्या:15-16
07- Is Success Overrated - Divyanshi Yadav पृष्ठ संख्या:17-18
08- AI टेक्नोलॉजी की गिरफ्त में युवा - कुमकुम मिश्रा पृष्ठ संख्या:19-20
09- विज्ञान हमें बेहतर बनाता है - सोफिया अंजुम पृष्ठ संख्या:21
10- वक़्त के साथ - तनीशा चावला पृष्ठ संख्या:22
11- दीन और दुनिया की बातें - सालेहा खातून पृष्ठ संख्या:23
12- कागज के लिबाज़ काँच के ख्वाब - देवकी पृष्ठ संख्या:25
13- पुराने जमाने का टीवी - संगीता पृष्ठ संख्या:26
14- Spark of Happiness - Tannu Goyal पृष्ठ संख्या:27
15- कैम्पस क्रॉनिकल पृष्ठ संख्या:28-34
16- विकास के पायदान पृष्ठ संख्या:35-37

****

प्राचार्य का सन्देश

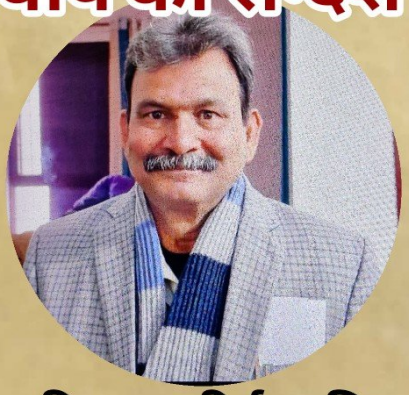

महाविद्यालय की ई- मासिक पत्रिका "मेधा" का अगला अंक प्रकाशित होने जा रहा है, जिसे आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष एवं गर्व की अनुभूति हो रही है। "मेधा" मासिक पत्रिका का अर्थ निरंतर ज्ञान और सृजनात्मकता की वर्षा का प्रतीक है। उत्तराखंड राज्य के ऊधम सिंह नगर जनपद में स्थित सरदार भगत सिंह राजकीय स्ना. महाविद्यालय रुद्रपुर के उच्च शिक्षा परिप्रेक्ष्य में यह पत्रिका विद्यार्थियों के विचारों, ज्ञान और रचनात्मक ऊर्जा की अविरल धारा को अभिव्यक्त करने का उचित माध्यम है। आज हम ऐसे समय में जी रहे हैं, जहां शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है। आज का विद्यार्थी बहुआयामी हैं। वह अध्ययन के साथ-साथ समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझता हैं।

मैं अपने विद्यार्थियों से कहना चाहता हूँ कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल अंक प्राप्ति ही नहीं बल्कि एक संतुलित ,सशक्त और सजग व्यक्तित्व का निर्माण भी है। आत्मविश्वास, अनुशासन और निरंतर प्रयास ही उच्च शिक्षा के महत्वपूर्ण तीन स्तंभ हैं, जो आपको प्रत्येक क्षेत्र में सफलता दिला सकते हैं। प्रिय विद्यार्थियों, असफलताओं से डरने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक प्रयास और प्रत्येक असफलता जीवन का एक नया अध्याय है। जो अंततः सफलता की भूमिका का निर्माण करता है।

मैं इस पत्रिका के संपादक, छात्र-छात्रा संपादक मंडल, छात्र संघ तथा समस्त विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूं, जिनके प्रयासों से यह अंक प्रकाशित होना संभव हो पाया है। सभी को उज्जवल भविष्य की अनंत शुभकामनाएं।

(प्रो. अवधेश नारायण सिंह)
प्राचार्य

सम्पादक की कलम से

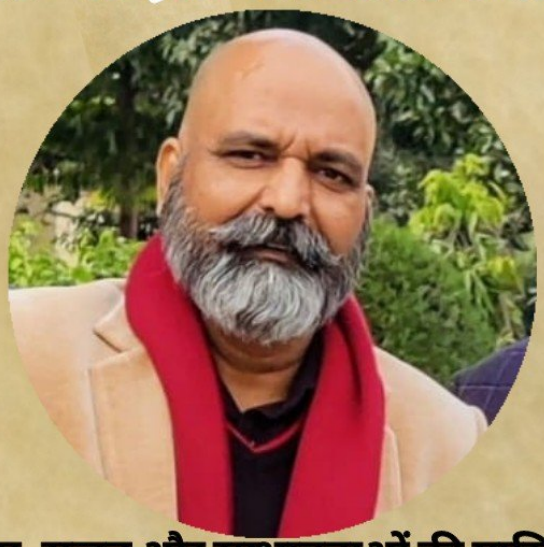

स्वप्न, सृजन और सम्भावनाओं की मासिक पत्रिका "मेधा" का मई अंक आपके हाथ में है। यह अंक ऐसे समय में प्रकाशित हो रहा है, जब विश्वविद्यालय की परीक्षाएँ प्रारम्भ हो चुकी हैं। परिसर का वातावरण परीक्षाओं की तैयारी, सपनों की उड़ान और भविष्य की नई सम्भावनाओं से भरा हुआ है। खुली हुई पुस्तकों के साथ जागती हुई रातों में आपके मन में सफलता की अनेक आकांक्षाएँ आकार ले रही हैं। ऐसे समय में मेधा का यह अंक आत्मविश्वास, प्रेरणा और सकारात्मक ऊर्जा का संदेश लेकर आपके बीच उपस्थित है।

प्रिय विद्यार्थियों, परीक्षाएँ जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव अवश्य हैं, परंतु वे जीवन का अंतिम सत्य नहीं हैं। इन परीक्षाओं के माध्यम से प्राप्त अंक हमारी उपलब्धियों का एक संकेत मात्र हो सकते हैं, लेकिन ये हमारी संपूर्ण क्षमता, संवेदनशीलता और व्यक्तित्व का निर्धारण नहीं करते। इतिहास गवाह है कि जीवन में बड़ी सफलताएँ केवल परीक्षा कक्षों में नहीं, बल्कि संघर्ष, धैर्य, निरंतर सीखने की इच्छा और अपने लक्ष्य के प्रति अटूट समर्पण से अर्जित हुई हैं। इसलिए इस परीक्षा काल में आवश्यक है कि हम परिणाम की चिंता से अधिक अपने प्रयासों की गुणवत्ता पर ध्यान दें।

मेधा की सम्पादकीय टीम के कई बहुत ही कर्मठ और समर्पित सदस्यों की यह इस महाविद्यालय की अन्तिम परीक्षा है। साथ ही मेधा के कई बहुत ही सक्रिय सहयोगियों, रचनाकारों का भी यह आखिरी सेमेस्टर है। इसके बाद वो अपने सपनों को नई उड़ान देने के लिए नया आकाश चुनने वाले हैं। पिछले छह महीने के दौरान अपनी मेहनत, प्रतिबद्धता और सृजनशीलता से महाविद्यालय और मेधा को समृद्ध करने वाले ये मेधावी साथी अब जीवन के विस्तृत आकाश की ओर बढ़ रहे हैं। उनकी उपस्थिति ने केवल पृष्ठ नहीं भरे, बल्कि विचारों, सपनों और प्रेरणाओं की एक विरासत भी रची है। आज वे विदा

नहीं ले रहे, बल्कि अपने सपनों को नए पंख देकर नई दिशाओं की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। महाविद्यालय का यह अक्षयवट, कक्षाएँ और मेधा के ये अंक उनकी स्मृतियों और योगदानों को सदैव संजोए रखेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिस समर्पण से उन्होंने यहाँ अपनी पहचान बनाई है, उसी ऊर्जा से वे आने वाले हर मंच को आलोकित करेंगे। मैं इस बात को लेकर पूरी तरह से आश्वस्त हूँ कि मेधा के सभी रचनाकार महाविद्यालय छोड़ने के बाद भी पुरातन छात्र के रूप में मेधा से जुड़े रहकर अपनी रचनाओं से इसे समृद्ध करते रहेंगे।

इस अंक को शुवांशु बिष्ट, देवकी, कुमकुम मिश्रा, सालेहा खातून, सोफिया अंजुम, तनीशा चावला, अनामिका सिंह, पूजा पाठक, तनु गोयल, अनीशा झा और दिव्यांशी ने अपनी रचनाओं से समृद्ध किया है। इस अंक के सभी रचनाकारों का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि परीक्षा की तैयारी के बीच भी उन्होंने मेधा के लिए कुछ लिखने का समय निकाला।

आप सभी पाठकों से अनुरोध है कि अपनी रचनाओं, सुझावों और प्रतिक्रियाओं के माध्यम से इस ई-मैगज़ीन को और अधिक समृद्ध बनाएं। आप अपने सुझाव और प्रतिक्रियाएँ *sociosbs@gmail.com* पर भेज सकते हैं। आपकी सहभागिता ही हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा है।

Rajesh
02.06.2026

(डॉ.राजेश कुमार सिंह)
सम्पादक "मेधा"

Mental Health

Shuvanshu Bisht
B.A. 6th Semester

The most ignored and unpopular topic even after science advancements and numerous studies. I will try to address this topic more with the context of India, because even today, except for some metropolitan cities, talking about mental health is a taboo.
Why do Indians not want to talk about it?

Defence Mechanism-

Defence mechanism is a default and innate behaviour of a person which is activated in order to protect either one self or own beliefs. People have this high tendency of coming to position of denial which makes it difficult to accept the flaws. Specially in a country like India, where majority of the people play by religion or caste card, believes that High IQ or High level of consciousness or biologically greater genetics comes equals to High caste or religion. For an reference we can take some examples:

1. Punjabis and pathans are natural body builders.
2. People of Bihar and south are naturally intelligent.
3. Talking about sexual knowledge is considered to be unconventional (unsanskari)

Above are few of the examples which obviously have many exceptions but people due to their blind beliefs don't

accept the flaws. Now this is not a negative factor for the mental health infact sometimes these beliefs give rise to one's confidence but the problem arises when these orthodox approaches are forcefully diluted in a person with different potential or aptitude.

People hesitate in talking about their problems and supress their thoughts and real potential. Many social media posts depicts that talking about these mental health issues like anxiety or depression or be it a mood disorder is nothing but a sign of weakness!! You must have heard people saying "aisa to sabke sath hota hai" and this is where talking about one's problems becomes a taboo or considered as the weakness in the society.

How to Improve-

Be it any field there are always a scope of improvements. Even in mental health we can improve the deteriorating condition of our people and mostly the kids. The major step towards improving anything lies at the very first step. Here, I think, we need to firstly understand that strength doesn't lie in the bloodlines solely. The genetics play a very important role in shaping one's body but only a person has to shape itself in a complete manner. We need to accept that anyone out there can be a victim of mental health issues such as mood disondens, anxiety, chronic stress disorder, and so on.

For example, China improved their health ratio (average height, athletic strength, technology) significantly in the past few decades. Their average height and productivity

has multiplied. When a person is mentally healthy, naturally he/she becomes productive. We should also take lessons and focus on improving ourselves by ignoring the irrelevant societal beliefs which are majorly based on caste and religion. We must focus on spending time with children and listen to the person without making any approaches on at least make them feel free to talk. This method is called the 'Free Association technique' where a person talks whatever they want without holding any filter.

The very effective way that I can think of to improve one's mental condition is "talk therapy". People should talk to each other, this does not guarantee that it will surely solve the issue you are upset with, but this will surely make you lighter and always remember that "A bird can not fly with wet wings" .

I might be wrong at some places and references but the message I want to convey with this blog is that talking about one's mental condition should not be tagged a dramatic person or should not be considered as weakness. Only then we can understand each other. And as far as I can think, this will also reduce the crime rates as more will be able to recognize themselves ultimately increasing the happiness index.

****

"Dowry Didn't Die. It Just Learned Sophisticated Language."

Anamika Singh
B.A. 6th Semester

Every Indian wedding begins like a performance. Lights bright enough to blind reality. Gold heavy enough to look like pride. Smiles rehearsed carefully for photographs that will later be shown like a "victory". As if a girl crossing the threshold of another house is still the happiest ending society can imagine for her. The photographs always look beautiful. No one photographs the fear. No one photographs the mother quietly calculating how much more she still has to give after the wedding is over. No one photographs the girl mentally rehearsing how much of herself she will have to shrink in order to be accepted inside a new family. Dowry did not disappear with modernity. It simply learned better vocabulary. Today it hides behind words like "expectations", "gifts," "lifestyle," "standard," and society's favourite word "adjustment" and sometimes the payment demanded is not cash at all. Sometimes it is silence.

A woman is educated enough to earn, but trained enough to tolerate. She is told to become independent, but not so independent that she becomes difficult to control. She is encouraged to dream, but only dreams that can survive inside somebody else's household and this contradiction is quietly destroying an entire generation of women. We live in the age of feminism, equality campaigns, corporate leadership programs

and social media activism.An age where girls top examinations, build careers, travel alone, and speak confidently on public platforms. Yet every few hours somewhere in this country, another woman enters a police report. Thousands of downy related deaths are still recorded every year in India. Lakhs of cases linked to cruelty,harassment, and domestic abuse continue to appear in official records. And statistics are frightening not only because of the numbers they show but because of the suffering they fail to count. Because the most dangerous violence is often the violence society normalises.

"Sometimes he loses his temper.""Every marriage has problems.""You should learn to adjust.""At least he provides for you."Perhaps that is how cruelty survives for generations not loudly, but politely. And what makes this tragedy darker is that modern violence rarely looks like old violence.Today's abuse can wear perfume. It can speak fluent English. It can hold degrees. It can post anniversary pictures online while destroying someone emotionally in private.The problem was never lack of education alone. The problem is emotional illiteracy. We taught sons how to become successful, but not how to process rejection, anger, insecurity, or ego.

So one man throws acid because a woman refused marriage. Another kills because she demanded commitment.One woman dies because downy was not enough. Another spends years dying slowly inside a relationship while

society calls her "adjusting." And then we ask: "Why are modern women afraid of marriage?" As if fear appears from nowhere.

This generation does not fear love. It feans the possibility of disappearing inside it and despite all this, women still continue believing in relationships. Still continue building homes. Still continue loving with dangerous sincerity. Perhaps that is the most heartbreaking thing of all: women are still expected to enter marriage like believers, while carrying the survival instincts of warnions. Real progress will not come when weddings become mone expensive. It will come when daughters no longer need emotional endurance as a life skill before marriage. The day a woman feels safer inside a marriage than outside it, India will finally have the right to call itself modern.

College Life: The Best Phase of Life

"Where Dreams Begin and Memories Last Forever"

Pooja Pathak
B.B.A. 2nd Semester

College life is not only about studies, it is also about learning, friendship, and enjoying life. College life is one of the most beautiful parts of a student's life. It is a time full of happiness, learning, fun, and new experiences. After school, students enter college with many dreams and hopes for their future. College gives students freedom, confidence, and many opportunities to grow and learn new things.

One of the best things about college life is friendship. College friends become very close and support each other in every situation. Students spend time together in classrooms, libraries, canteens, and college functions. They study together, laugh together, and create many beautiful memories. These memories stay in the heart forever.

College life is not only about books and exams. It also helps students improve their personality and skills. Students take part in cultural programs, sports, seminars, competitions, and other activities. These activities help students become more confident and active. Many students discover their hidden talents during college life.

Teachers also play an important role in college life. Good teachers guide students and motivate them to work hard and achieve success. Their support helps students move in the night direction and become better people.

College life also teaches students many important lessons. Sometimes students face stress, exam pressure, and failures. These difficulties make them stronger and more responsible. Students learn how to manage time, solve problems, and never give up in difficult situations.

Another special thing about college life is independence. Students start taking their own decisions and learn from their experiences. They begin to understand their goals and think seriously about their future careers and dreams.

The best part of college life is the memories it gives. Annual functions, farewell parties, classroom fun, canteen talks, and even exam days become unforgettable moments later in life. After college ends, students always miss those happy days.

College life is truly the best phase of life because it teaches students many important things along with education. It gives friendship, confidence, knowledge, and beautiful memories. The lessons and experiences of college life stay with us forever and help us become successful in the future.

****

The Algorithm's Toll on Gen Z

Anisha Jha
M.A. 1st Semester, History

Algorithms basically can be stated as the invisible systems that decide what users see online and shape much of their daily lives, it resonates their thoughts, feelings and people feel much attached to them, especially gen z because they are exposed to them since very young age. One of the biggest effects of algorithms is their impact on mental health. Social media platforms often promote unrealistic beauty standards, luxury lifestyles, and so called perfect lives because such content gains more engagement. As Gen Z spends hours consuming this material, many young people begin comparing themselves to influencers and celebrities. This comparison often leads to anxiety, insecurity, and depression.

Algorithms also contribute to addiction. Platforms are designed to maximize screen time based on a user's interests. Short videos, doom scrolling, and instant notifications trigger dopamine release in the brain, making social media highly addictive. Gen Z, being highly active online, is especially vulnerable to manipulation by viral content and digital trends. As a result, many Gen Z individuals experience reduced focus, poor sleep habits, and difficulty concentrating on studies or real-life activities.

However, algorithms are not entirely harmful.

They can help young people discover educational content, creative opportunities, supportive communities, and career paths. The problem lies in overconsumption and the lack of awareness about how these systems influence behaviour.

In conclusion, algorithms have really shaped Gen Z's lives. While they offer entertainment and connectivity, they also contribute to mental health struggles, addiction, misinformation, and social pressure. Hence, it is important for young people to use social media mindfully rather than doom scrolling and getting manipulated online.

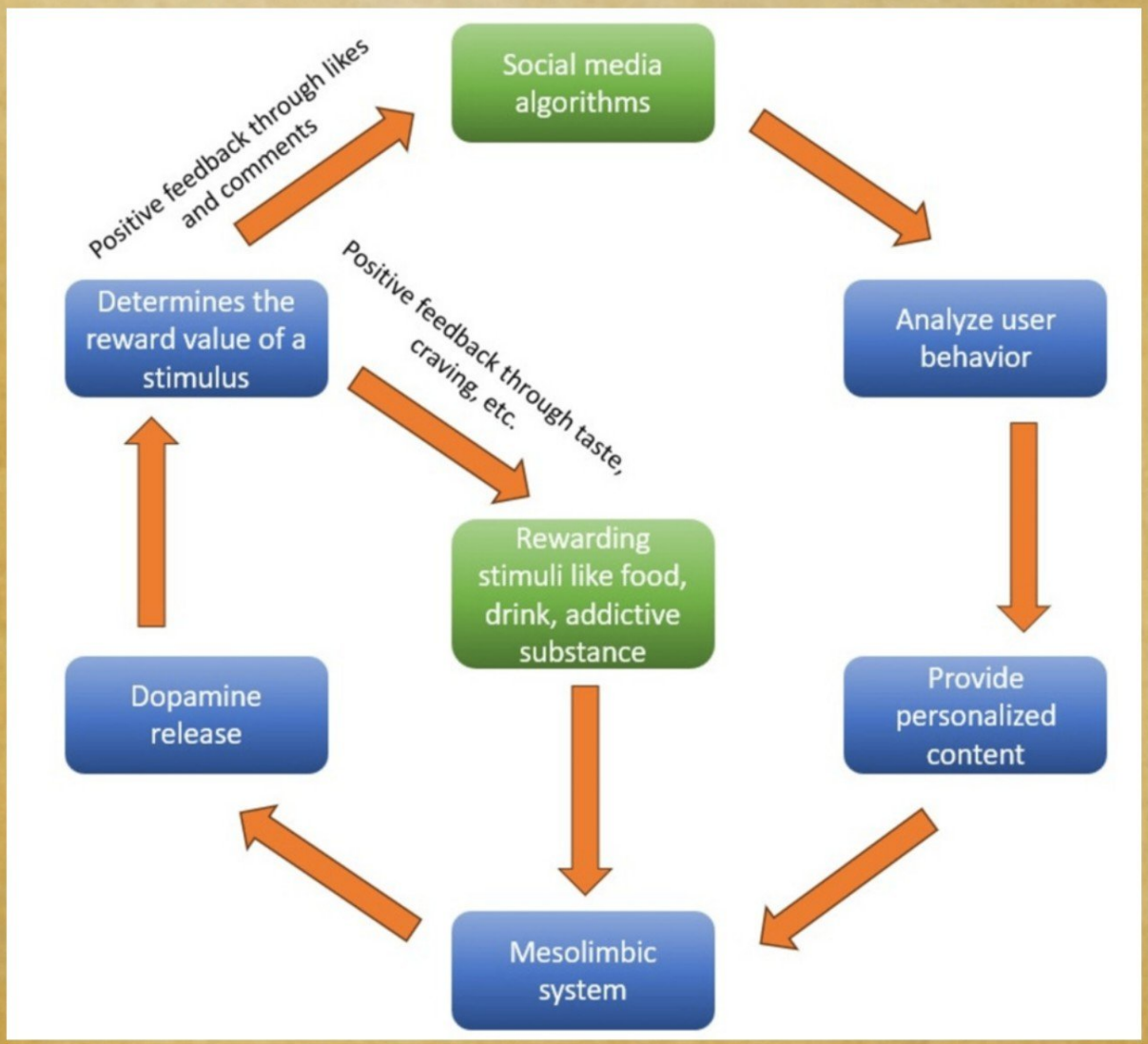

****

Alumnae Corner

Is Success Overrated ?

Divyanshi Yadav
Department of Sociology

In today's world, success is often seen as the most important goal in life. From a young age, we are taught to study hard, get good marks, build a strong career and earn money. Society defines success as having a high-paying job, a big house, and a perfect life. But the question is, is success really as important as we think? Or is it overrated?

As Albert Schweitzer once said, "Success is not the key to happiness. Happiness is the key to success." This quote makes us think deeply. Many people spend their entire lives chasing success but forget to be happy in the present.

Take the example of a student who studies day and night just to get top marks. They ignore their health, hobbies and social life. Yes, they may achieve success in exams, but at what cost? Stress, burnout, and loneliness often follow. This shows that success alone does not guarantee a fulfilling life.

Another example can be seen in the corporate world. Many professionals earn high salaries and live luxurious lives, yet they often feel tired, stressed and disconnected. Despite having everything, they still search for peace and satisfaction. This proves that success without inner happiness can feel empty.

Social media has also changed our understanding of success. We constantly see people showing their achievements, foreign trips, and "perfect" lives online. As Theodore Roosevelt said, 'Comparison is the thief of joy. When we compare ourselves with others, we feel pressure to match their success, even if it is not what we truly want.

This does not mean that success is not important. It is good to have goals and work hard. Success can give us confidence, stability and opportunities. But it should not come at the cost of our mental health, relationships or personal happiness.

In reality, success is different for everyone. For some, it means earning money. For others, it means following their passion, helping others or simply living a peaceful life. A person who chooses a simple life with happiness and contentment can be just as successful as someone with wealth and fame.

Success should be balanced with a meaningful life. As the saying goes, "Do not chase success, chase purpose." When we focus on purpose and happiness, success often follows naturally.

So, is success overrated? Maybe not completely, but it is definitely misunderstood. Because in the end, a successful life is not just about reaching the top, but also about enjoying the journey.

****

AI टेक्नॉलोजी की गिरफ्त में आती युवा पीढ़ी

कुमकुम मिश्रा
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर, राजनीति विज्ञान

आधुनिकता से प्रभावित होती आज की युवा पीढ़ी अपनी संस्कृति, अपनी परंपराओं को भूलती जा रही है। आज बाजारवाद इतना विकसित हो चुका है कि यह अब हमें अपनी ओर खींचने लगा है। आपको क्या लगता है, क्या हम अपनी युवा पीढ़ी को इसकी चपेट में आने से रोक पाएँगे ??

जी हाँ...मैं बात कर रही हूँ आधुनिकीकरण के सबसे भरोसेमंद और दिलचस्प AI टेक्नोलॉजी की। जैसे कि हम सब जानते है कि आज AI विश्व भर में प्रचलन में है और ये एक ऐसी टेक्नोलॉजी है जिसके माध्यम से बड़े से बड़ा कार्य भी मिनटों में हो जाता है। हम अपनी हर समस्या का समाधान AI में खोज सकते हैं, यह हमारी किसी भी समस्या या संदेह का निराकरण मिनटों में कर देता है। AI टेक्नोलॉजी के कई प्लेटफॉर्म हैं, जैसे– Meta AI, Chatgpt, google gemini आदि। ये सब ऐसे प्लेटफॉर्म हैं, जहाँ आप–हम अपनी समस्याओं का समाधान क्षणभर में प्राप्त कर सकते हैं। AI ने सब कुछ इतना आसान बना दिया है कि अब कोई मेहनत ,संघर्ष करना ही नहीं चाहता।

पहले जहाँ समाचार–पत्र हर घर में दिखाई देता था, रविवार की सुबह सब मोहल्ले के चौराहों पर, दुकानों में एक साथ बैठकर अखबार पढ़ा करते थे; वहीं आज उन अख़बारों का कोई महत्व न रहा। जहाँ पहले बच्चे किताबों से पढ़ा करते थे ; आज वह बच्चे किताबों से पढ़ना ही नहीं चाहते। जानते हैं क्यों? क्योंकि किताबों और समाचार पत्रों की जगह अब AI टेक्नोलॉजी, स्मार्टफोन्स ने ले ली है। और इससे सर्वाधिक प्रभावित हो रही है हमारी युवा पीढ़ी; जो आधुनिकीकरण और नवीन टेक्नोलॉजी का भरपूर उपयोग कर रही है। वह घंटों तक अपने स्मार्टफोन्स में व्यतीत कर रही है। आसान प्रश्नों के उत्तर भी फ़ोन से देखने लगी है। सीखने की क्षमता तो मानो खत्म होती जा रही है। किताबों का त्याग करके युवा यूट्यूब , गूगल का सहारा लेने लगे हैं। वे पूरी तरह से एक टेक्नोलॉजी के ऊपर निर्भर रहने लगे हैं ; जो कि अच्छा संकेत नहीं है। उनको यह ज्ञात नहीं कि वह टेक्नोलॉजी पर अतिशय निर्भरता के चलते धीरे -धीरे अपनी संस्कृति और परंपराओं से दूर होते जा रहे हैं।

ऐसा नहीं है कि नवीन टेक्नोलॉजी और आधुनिकीकरण का उपभोग

करना पूर्णतः गलत है। अगर इसका इस्तेमाल अच्छे कामों के लिए हो, सीमित और नियंत्रित तरीके से हो- तो यह गलत नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि AI का दुरुपयोग ही हुआ है। बहुत सारी सेवाओं में AI टेक्नोलॉजी का सही तरह से उपयोग भी किया गया है, जैसे - ई-बैंकिंग सेवाएं, नेट बैंकिंग, डिजी लॉकर, ई चालान इत्यादि। जहाँ पहले लोगों को लंबी कतारों में खड़े रहकर बैंकिंग कार्य करने पड़ते थे, आज AI की बदौलत हमें लंबी कतारों में खड़ा नहीं होना पड़ता। घर बैठे ही हम पैसों का लेने-देन कर सकते हैं। आज हर घर में स् मार्ट मीटर लग चुके हैं, सड़कों पर आपने देखा होगा कि AI कैमरे आपको हर मोड़ पर नजर आयेंगे। इससे होने वाली दुर्घटनाओं का प्रभाव भी कम हुआ है। ये AI कैमरे आपके वाहन की गति को 1km की दूरी से ही कैच कर लेते हैं। इन सभी चीजों के कारण आज हम अपनी सुरक्षा के प्रति जागरूक हुए हैं। सबने हेलमेट पहनना सीख लिया हैं, दुर्घटनाएं कम होने लगी हैं।

अतः मैं यह कहना चाहूँगी कि AI टेक्नोलॉजी देश में आधुनिकीकरण के विकास के लिए है। देश की उन्नति के लिए इनका आविष्कार किया गया है। यह आपकी जरुरत अवश्य हो सकती है, लेकिन इसको अपना जीवन न बनने दें। यह आपकी सहायता तो करेगा, लेकिन इस पर पूरी तरह निर्भर मत रहिए। आप सब नहीं जानते कि आपके अंदर अपार क्षमता समाहित है और ये किसी टेक्नॉलॉजी की मोहताज नहीं है।आप यह कदापि न भूलें कि हमारे देश में बहुत से महान विद्वानों ने जन्म लिया है और वो सभी स्मार्टफोन, AI टेक्नोलॉजी के अधीन नहीं थे, जैसे- आर्यभट्ट, रामानुजन, कौटिल्य इत्यादि। AI टेक्नोलॉजी और स्मार्टफोन्स बनाने वाले लोग भी हमारे आपके बीच के ही लोग थे।

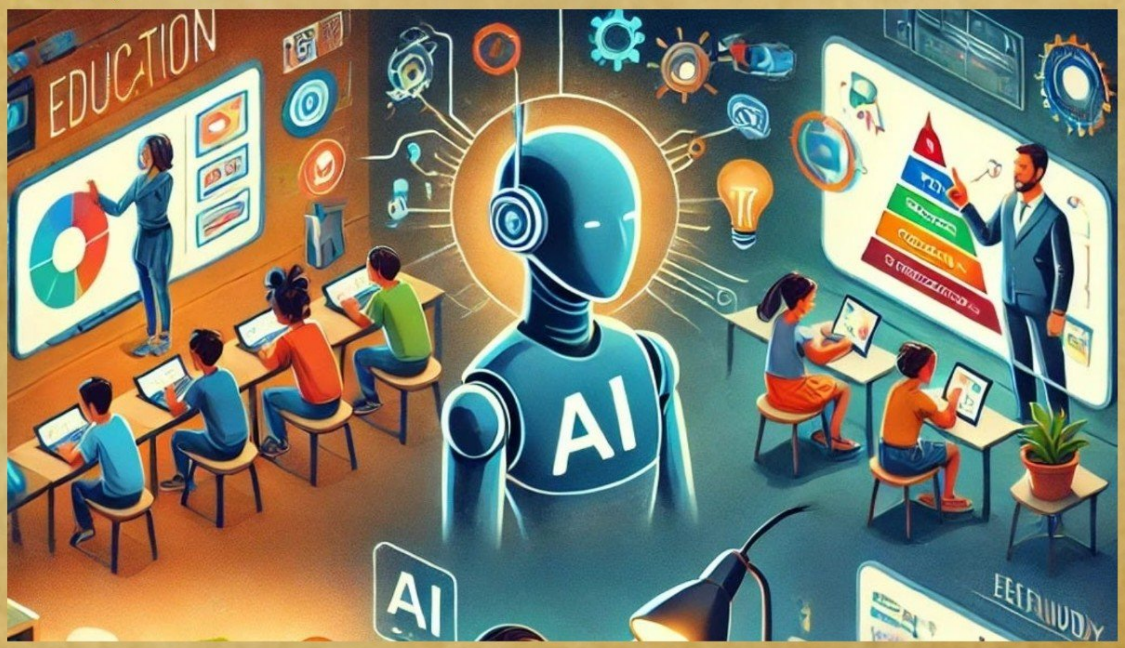

विज्ञान हमें बेहतर बनाता है

सोफिया अंजुम
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर, इतिहास

विज्ञान का सबसे सुन्दर सत्य यह है कि यह हमें स्वीकार करना सिखाता है कि हम सब कुछ नहीं जानते। यही अज्ञान हमें खोज की ओर ले जाता है, यही प्रश्न हमें आगे बढ़ाते हैं, और यही जिज्ञासा मनुष्य को साधारण से असाधारण बनाती है। विज्ञान अनिश्चितताओं से भरा है। हमारा जीवन भी किसी पहले से तय उत्तर की किताब नहीं है। यहाँ हर दिन एक नया प्रश्न है, हर अनुभव एक नई खोज है और हर असफलता एक नया अध्याय खोलती है।

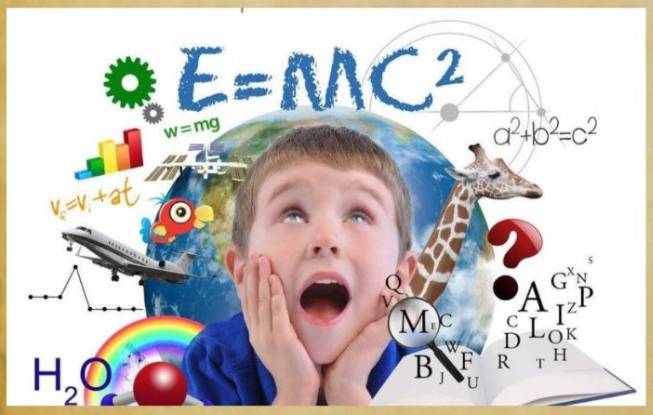

विज्ञान हमें सिखाता है गलत होना हार नहीं है, बल्कि समझ की ओर बढ़ने का पहला कदम है। जैसे वैज्ञानिक हजारों असफल प्रयोगों के बाद भी उम्मीद नहीं छोड़ते, वैसे ही इंसान को अपने सपनों से हार नहीं माननी चाहिए। अंधकार चाहे कितना भी गहरा हो, एक छोटी सी जिज्ञासा और ज्ञान की हल्की लौ उसे चीर सकती है। ज्ञान केवल किताबों में ही नहीं होता, वह प्रश्न पूछने में और यह स्वीकार करने में निहित होता है कि सीखना अभी बाकी है। विज्ञान हमें केवल ब्रह्मांड नहीं समझाता, वह हमें स्वयं को समझना भी सिखाता है। शायद जीवन की सबसे बड़ी प्रेरणा यही है कि हम हर दिन पहले से थोड़ा बेहतर, थोड़ा अधिक संवेदनशील और थोड़ा अधिक जागरूक बनें।

विज्ञान हमें केवल तथ्य नहीं देता, बल्कि अनुशासन, विनम्रता और सत्य के प्रति सम्मान भी सिखाता है। विज्ञान ने मुझे सिखाया है कि दुनिया उतनी सरल नहीं है, जितनी वह पहली नजर में दिखाई देती है। यहां हर उत्तर के पीछे एक और प्रश्न छिपा होता है, हर खोज के भीतर एक दूसरा रहस्य छिपा होता है। और यही जीवन की सबसे सुंदर बात भी है कि मनुष्य अपनी खुशी किसी खोज में भी ढूंढ सकता है। क्योंकि, जब कोई व्यक्ति किसी नई सच्चाई को समझने की कोशिश करता है, जब वह प्रकृति के किसी छोटे-से संकेत को ध्यान से समझता है, तब उसके भीतर एक ऐसी जिज्ञासा जन्म लेती है, जो अधिक स्थायी होती है। विज्ञान केवल प्रयोगशाला की ठंडी दीवारों में बंद विषय नहीं है, बल्कि यह संवेदनाओं, धैर्य और स्मृतियों का जीवंत संसार है।

****

वक़्त के साथ

तनीशा चावला
एम.एससी. चतुर्थ सेमेस्टर, रसायन विज्ञान

जब हर बात, हर अनुभव, हर घटना वक्त के साथ ही हो और वह सब फिर सही वक्त आने पर छूट भी जाए, बिना किसी तकलीफ और भावुकता के, तब जिंदगी कितनी सुंदर लगने लगेगी, फिर शायद किसी बात का डर नहीं रह जाएगा ।

देखा जाए तो बीता हर पल अगले ही क्षण मानो एक सपना हो जाता है, और आने वाला कल तो है ही एक सपना । गलती बस यह हो जाती है.... कि हम सपने में ही रम जाते हैं, फिर चाहे वह बीते हुए वक्त का हो या फिर आने वाले वक्त का...। वक्त के साथ हम चलते ही कब हैं? हमें वक्त के पीछे या वक्त के आगे चलना ही पसंद है। यह ऐसा लगता है कि जैसे वक्त भी अपना कोई साथी तलाश रहा हो, जो उसके साथ जी सके, उसके साथ चल पाए, जो उसमे पूर्णतः समा सके। ठीक है, माना कुछ अच्छा अनुभव रहा, खुश हो लिए, पर उस अनुभव का आदी हो जाना ही जिंदगी की सबसे बड़ी समस्या है। फिर वर्तमान में भी इंसान उसी अनुभव को खोजता हैं, उस अनुभव को वह बार-बार जीना चाहता है, उसे बार-बार महसूस करना चाहता है.....लेकिन पता है, इसका क्या परिणाम निकलता है??

व्यक्ति वर्तमान के बहुत खूबसूरत अनुभवों से चूक जाता हैं, पुराना तो उसे मिल नहीं पाता, और और वक्त के साथ जो मिल रहा है.. इंसान को उसका कोई मोल नहीं होता...तो फिर उसे डर सताता है, अपने आने वाले वक्त का....बस इस पूरी कहानी में मेरे मुताबिक तो वक्त जो हमारे साथ चलना चाहता है, वह बेचारा अकेला रह जाता है। वैसे मैं एक बात यहाँ और जोड़ना चाहती हूँ, कि जिस बीते हुए वक्त को पाने के लिए हम दिन रात सोचते हैं, अगर वो वक़्त मिल भी गया, शायद वह वही पुराने आनन्द से परिपूर्ण अनुभव हमें कभी नही दे पायेगा ।

आखिर में इसी फैसले पर आते हैं कि वक्त के साथ नई चीजों को जोड़ना और बहुत जर्जर हो चुकी चीजों को छोड़ना जरूरी है.....नहीं तो ये हमारे जीते जागते वक्त को मार देता है, वैसे भी पुराने बीते वक्त की अचेतन यादों को लेकर कहां तक ही जाया जा सकता है? प्रतिपल सब बदल रहा है, शायद वक्त के साथ हमें भी बदल जाना चाहिए.... इसी में भलाई है।

****

दीन और दुनिया की बातें

सालेहा खातून
बी.ए. षष्टम सेमेस्टर

मेरे तह-ए-दिल से एक सदा आई...
न जाने क्यों
जब भरोसे की बात आई,
सच तो ये है
ये बातें मुझे रास न आई।
जिस खुदा ने ये दुनिया बनाई
फिर न जाने क्यों
इसे जहान -ए फानी बतलाया।
चलो हमने मान लिया
जो चीज बनी है उसे फना होना है।
असल बात तो मुझे ये घर कर गई,
जिस माँ ने पैदा किया,
जिस बाप ने सहारा दिया,
जिस भाई ने बाजू बनकर साथ दिया
और जिस बहन ने दोस्त बनकर...
क्या ये सब झूठे रिश्ते हैं?
क्या यह सारी बातें फिजूल हैं?
ये बैचेन खयाल
मुझे मजबूर करते हैं सोचने पर,
जिनसे हम मिले,
जिनसे हमारे गहरे ताल्लुक बने
वो यहीं छूट जाएँगे,
लेकिन इसके अलावा
ये तो महशर में भी याद न आयेंगे।

कुछ ख्यालों को भूलने में
सदियाँ लग जाती है,
वो हम एक पल में भूल जाएँगे?
कहते हैं इन सब को भुलाकर
हम अपने आमाल को देखेंगे,
फिर सिर्फ एक गलती पर
हम जहन्नुम में डाले जाएँगे।
असल मतलब तो ये है
कि जो अल-मलिक है,
वह हमारा है,
जिसने माँ से सत्तर गुना ज्यादा
हमें प्यार किया है।
सो वो हर तरीके से सही है
ये जुबानियाँ आज भी
हमें बतलाई जाती हैं,
आमाल-ए -नेक
करने की सलाह दी जाती है।
मैं बस यही मानती हूँ
कि जो भी सच्चाई है
बस अपनी नीयत सही रखो,
यही तुम्हारी असल कामयाबी है।
राह-ए-दीन में भी
और
दुनिया में भी....

****

कागज़ के लिबाज़, काँच के ख़्वाब

देवकी, बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर

इस चमकते हुए शहर में हम अपना अक्स ढूँढते हैं,
सब आगे निकल गए, हम ठहरने का वक़्त ढूँढते हैं।
ज़माने की इस मसरूफ़ दौड़ में,
हम अपनी ही पहचान खो बैठे हैं।
पाने की जुस्तजू में न जाने क्या-क्या,
हम अपना वो मासूम बचपन खो बैठे हैं।
कंधों पर उम्मीदों का एक भारी बस्ता है,
और चेहरे पर झूठी मुस्कुराहटों का पहरा।
इस अदृश्य कामयाबी की नुमाइश में,
अंदर का सन्नाटा हो गया है और गहरा।
कैंपस की इन रोशन गलियों में देखो,
हर कोई किसी और जैसा बनना चाहता है।
अपनी ही रूह के अक्स से बेख़बर,
बस दूसरों की महफ़िलों में सजना चाहता है।
मगर ऐ मुसाफ़िर, ज़रा ठहर कर तो देख,
इस रफ़्तार में तेरा क्या-क्या छूट गया।
डिग्रियों के इस कागज़ी लिबाज़ के पीछे,
तेरा वो बेपरवाह हँसना कहाँ रूठ गया?
कभी तन्हाई में बैठकर खुद से भी गुफ़्तगू करना,
कि ये ज़माना तो सिर्फ़ ऊँचाइयों का तलबगार है।
पर असली सुकूँ तो उस शाम की चाय में है,
जहाँ कोई दिलदार, बिना शर्तों के यार है।
मुखौटे उतार कर जब आईने के सामने बैठोगे,
तो एक ही सवाल दिल से आएगा—
कि अगर इस जहाँ को जीत भी लिया ऐ दोस्त,
तो अपनी सादगी को खोकर, तूने क्या पाया है..!!!

****

पुराने जमाने का टीवी

संगीता
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

T.V उस समय
सिर्फ एक मशीन नहीं थी,
वो तो एक वजह थी
जिससे पूरा गाँव
एक साथ बैठा करता था..
बड़ा और भारी बॉक्स,
पीछे मोटा हिस्सा, ऊपर एंटीना,
और चैनल आता था दूरदर्शन..
गाँव की सारी औरतें, लोग, बच्चे
अपने काम खत्म करते
और चटाई बिछाकर
देखने के लिए बैठ जाते थे
भले ही
T.V black and White था,
black dot के साथ
स्क्रीन पर लकीरें पड़ती थीं..
मगर लोगों की खुशी
स्क्रीन से भी साफ थी
उस समय हर शाम
जैसे त्यौहार सा था,
सभी साथ बैठकर हँसी-मजाक करते थे..
सबमें बहुत प्यार था..

****

"Spark Of Happiness"

Tannu Goyal
B.A. 4th Semester

Spark of happiness, oh so bright,
Dancing in my heart, with pure delight!
You sparkle and shine, like a star in the night,
Filling my soul, with joy and light.

With every smile, you grow and glow,
A warmth that spreads, and makes me whole.
You ignite passions, and fuel my dreams,
A spark that kindles, and never beams.

In moments of joy, you sparkle and play,
A precious gem, that shines every day.
You bring laughter and cheer, and banish all fears,
A spark of happiness, that wipes away tears.

May this spark of joy, forever stay,
A guiding light, that leads me on my way.
May it fill my life, with happiness and glee,
And bring a smile, that's contagious and free!

****

NCC द्वारा दस दिवसीय ड्रोन प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर में दिनाँक 13 अप्रैल 2026 से 22 अप्रैल 2026 तक एन.सी.सी. की 10 दिवसीय ड्रोन ट्रेनिंग कैप्सूल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह 10 दिवसीय ड्रोन कैप्सूल प्रशिक्षण UK Air Sqn NCC, पंतनगर (एयर विंग) द्वारा आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में 78 UK BN NCC के कैडेट्स ने भी सक्रिय रूप से सहभागिता की। कुल 20 कैडेट्स इस प्रशिक्षण में सम्मिलित थे, जिनमें 10 एयर विंग एवं 10 आर्मी विंग के कैडेट्स शामिल थे, जिससे दोनों विंग के बीच समन्वय एवं सहभागिता को बढ़ावा मिला।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अवधेश सिंह के मार्गदर्शन एवं सहयोग से इस प्रशिक्षण का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। आर्मी विंग NCC की एएनओ लेफ्टिनेंट डॉ. निमिता कन्याल एवं एयर विंग NCC की सीटीओ डॉ. अलंकृता सिंह के समन्वय एवं निर्देशन में प्रशिक्षण सुचारु रूप से संचालित हुआ। इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य कैडेट्स को ड्रोन प्रौद्योगिकी का आधारभूत ज्ञान प्रदान करना तथा उन्हें व्यावहारिक रूप से सक्षम बनाना था। यह प्रशिक्षण अनुभवी प्रशिक्षकों कॉर्पोरल मनोज कार्की एवं कॉर्पोरल साहदेव सिंह के मार्गदर्शन में संचालित किया गया, जिन्होंने कैडेट्स को सरल एवं प्रभावी तरीके से प्रशिक्षण प्रदान किया।

इस प्रशिक्षण के दौरान कैडेट्स को ड्रोन के मूलभूत अवयवों जैसे फ्रेम, मोटर, प्रोपेलर, फ्लाइट कंट्रोलर, बैटरी एवं कैमरा के विषय में विस्तार से

समझाया गया। प्रत्येक अवयव की कार्यप्रणाली को सरल भाषा में स्पष्ट किया गया, जिससे कैडेट्स को यह समझने में सुविधा हुई कि सभी भाग मिलकर किस प्रकार एक संतुलित एवं नियंत्रित उड़ान सुनिश्चित करते हैं। अंततः उड़ान के मूल सिद्धांतों पर चर्चा की गई, जिसमें लिफ्ट, थ्रस्ट, गुरुत्वाकर्षण एवं संतुलन जैसे वैज्ञानिक सिद्धांतों को उदाहरण सहित समझाया गया। यह भी बताया गया कि वायु के प्रवाह एवं दाब के अंतर के कारण ड्रोन किस प्रकार आकाश में स्थिर रह पाता है। इसके पश्चात सभी 20 कैडेट्स को व्यावहारिक उड़ान अभ्यास के लिए ले जाया गया, जहाँ प्रत्येक कैडेट को ड्रोन संचालन का अवसर प्रदान किया गया। इस अभ्यास के माध्यम से कैडेट्स ने अपने नियंत्रण कौशल को और बेहतर बनाया तथा वास्तविक परिस्थितियों में उड़ान का अनुभव प्राप्त किया।

उड़ान अभ्यास के बाद कैडेट्स को सिमुलेटर के माध्यम से अभ्यास कराया गया, जिसमें उन्हें विभिन्न आकृतियाँ जैसे वर्गाकार, वृत्ताकार एवं आठ के आकार (8) बनाने का अभ्यास कराया गया। प्रशिक्षकों द्वारा सरल एवं प्रभावी तरीकों के माध्यम से यह समझाया गया कि कम प्रयास में संतुलित एवं सटीक आकृतियाँ कैसे बनाई जा सकती हैं। इस अभ्यास से कैडेट्स की नियंत्रण क्षमता एवं सटीकता में उल्लेखनीय सुधार हुआ। इसके अतिरिक्त सैद्धांतिक सत्र में कैडेट्स को डिजिटल स्काई प्लेटफॉर्म के विषय में

जानकारी प्रदान की गई। इस दौरान उन्हें उड़ान से संबंधित नियमों एवं प्रतिबंधों के बारे में बताया गया, जिसमें विभिन्न उड़ान निषिद्ध क्षेत्र-जैसे लाल क्षेत्र (पूर्णतः प्रतिबंधित), पीला क्षेत्र (नियंत्रित) एवं हरा क्षेत्र (अनुमति प्राप्त) की जानकारी दी गई।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कैडेट्स को पुरस्कृत भी किया गया। प्रशिक्षण में कैडेट निहाल श्रीवास्तव (आर्मी विंग) ने प्रथम स्थान, कैडेट पंकज पांडेय (एयर विंग) ने द्वितीय स्थान तथा कैडेट दिव्यांशु पंत ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

यह प्रशिक्षण अत्यंत ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक रहा, जिसने कैडेट्स को ड्रोन प्रौद्योगिकी की आधारभूत समझ प्रदान की तथा आगामी व्यावहारिक सत्रों के लिए एक सुदृढ़ आधार स्थापित किया।

वर्तमान समय में ड्रोन तकनीक का उपयोग रक्षा, निगरानी, आपदा प्रबंधन, कृषि, मानचित्रण एवं फोटोग्राफी जैसे अनेक क्षेत्रों में किया जा रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए यह प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिससे कैडेट्स आधुनिक तकनीकी जान से परिचित हो सकें एवं उनके भीतर तकनीकी दक्षता का विकास हो। यह प्रशिक्षण पूर्णतः अनुशासित वातावरण में संचालित किया गया, जिसमें सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक अभ्यास पर भी समान रूप से ध्यान दिया गया। इस प्रकार यह प्रशिक्षण कैडेट्स के समग्र विकास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

यूथ रेडक्रॉस सोसायटी द्वारा "मानवता के पक्ष में" विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन

दिनाँक 08 मई 2026 को सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर में विश्व रेडक्रॉस दिवस मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की यूथ रेड क्रॉस सोसाइटी के द्वारा 'मानवता के पक्ष में'(On the Side of Humanity) विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस विचार गोष्ठी में महाविद्यालय की नवगठित यूथ रेड क्रॉस की चारों इकाई के स्वयंसेवियों ने प्रतिभाग किया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.अवधेश नारायण सिंह ने कहा कि विश्व रेडक्रास दिवस हमें याद दिलाता है कि आपसी मदद और सहयोग से ही समाज में सच्ची मानवता का संचार हो सकता है। विचार गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए यूथ रेडक्रॉस सोसायटी के प्रभारी डॉ.राजेश कुमार सिंह ने रेड क्रॉस द्वारा पूरी दुनिया में जरूरतमंद लोगों की सेवा में किए गए अभूतपूर्व योगदान पर प्रकाश डाला। आपने बताया कि निस्वार्थ भाव से लोगों की स्वैच्छिक सेवा ही रेड क्रॉस का सार रहा है। यूथ रेड क्रॉस सोसाइटी के सह प्रभारी गणित विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ राजेश कुमार मौर्य ने विचार गोष्ठी की थीम पर बोलते हुए कहा कि रेड क्रॉस 'मानवता के पक्ष में' एक ऐसा संदेश है जो आज के चुनौतीपूर्ण समय में अत्यंत प्रासंगिक है। यह विषय हमें मानवीय मूल्यों की रक्षा करने की आवश्यकता का स्मरण कराता है। आपने बताया कि रेड क्रॉस के स्वयंसेवी पूरी दुनिया में शांति, दया, परोपकार और बेहतर जीवन के लिए उम्मीद के प्रसार हेतु निरंतर प्रयासरत हैं।

इस विचार गोष्ठी में समाजशास्त्र विभाग के प्रो. रवींद्र कुमार सैनी, प्रो. हेमलता सैनी तथा महाविद्यालय यूथ रेडक्रॉस सोसाइटी की चारों इकाइयों के स्वयंसेवी उपस्थित रहे।

****

समाजशास्त्र विभाग द्वारा शोध पद्धति पर कार्यशाला का आयोजन

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर में दिनाँक 11 मई 2026 को समाजशास्त्र विभाग द्वारा "शोध पद्धति शास्त्र पर एक दिवसीय कार्यशाला" का आयोजन किया गया। वर्तमान में समाजशास्त्र विभाग के बी.ए. षष्टम सेमेस्टर के 301 और स्नातकोत्तर कक्षाओं के कुल 79 विद्यार्थियों द्वारा लघु शोध/प्रोजेक्ट कार्य किया जा रहा है। इन विद्यार्थियों को शोध कार्य से जुड़ी सैद्धांतिक और व्यावहारिक जानकारियां प्रदान करने के उद्देश्य से इस कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस कार्यशाला में समाजशास्त्र विभाग की प्रभारी प्रो.हेमलता सैनी विद्यार्थियों को गूगल फॉर्म के माध्यम से शोध से जुड़े आंकड़ों के संग्रह, उनके विश्लेषण के बारे में विस्तार से बताया। इसके पश्चात समाजशास्त्र विभाग के प्रो.रवीन्द्र कुमार सैनी ने विद्यार्थियों को आंकड़ों के संग्रह में बरती जाने वाली सावधानियों और संभावित त्रुटियों के निराकरण के सम्बन्ध में जानकारी दी। इसी विषय के डॉ.राजेश कुमार सिंह ने विश्लेषण के पश्चात शोध परियोजना की रिपोर्ट लिखने और प्रस्तुत करने की विभिन्न बारीकियों से छात्र-छात्राओं को अवगत कराया। इसके पश्चात प्रश्नोत्तर सत्र में विभाग के प्राध्यापकों ने छात्र-छात्राओं द्वारा शोध परियोजना से सम्बन्धित पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दिया। इस कार्यशाला में कुल 92 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया ।

****

नशामुक्त भारत अभियान के तहत जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुद्रपुर में दिनाँक 12 मई 2026 को नशा मुक्त भारत अभियान के तहत एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के नशामुक्ति प्रकोष्ठ, एनसीसी, एनएसएस और गायत्री चेतना केंद्र रुद्रपुर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित इस कार्यक्रम में युवाओं को नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक किया गया।

इस नशामुक्ति कार्यक्रम की शुरुआत महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अवधेश नारायण सिंह द्वारा दीप प्रज्वलन से हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि गायत्री चेतना केंद्र के श्री मस्त राम शर्मा जी द्वारा छात्र-छात्राओं का आह्वान किया कि वे नशे की कुरीति से दूर रहते हुए इसे समूल नष्ट करने का संकल्प लें। प्राचार्य महोदय द्वारा राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र चिंतन के प्रति अपने दायित्व का बोध कराते हुए सकारात्मक दिशा की ओर अग्रसर होने का आह्वान किया गया। महाविद्यालय की नशामुक्ति प्रकोष्ठ की संयोजक प्रो.आशा राणा ने मानव जीवन की महत्ता बताते हुए अपने विचार और व्यवहार को शुद्ध रखने पर बल दिया। कार्यक्रम में एनसीसी, रोवर्स रेंजर्स और एनएसएस के छात्र-छात्राओं द्वारा नुक्कड़ नाटक, समूह गीत, लोक गीत और भाषण की सुंदर प्रस्तुति की गई। गायत्री चेतना केंद्र रुद्रपुर से श्रद्धा छाबड़ा और सुमन शर्मा ने युवा छात्र छात्राओं को भारत के सुनहरे भविष्य में योगदान करने के प्रति प्रेरित करते हुए देशगीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अंत में छात्र-छात्राओं को नशा विरोधी शपथ दिलाई गई।

****

सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुद्रपुर में दिनाँक 18 मई 2026 को राष्ट्रीय सेवा योजना तथा एनसीसी के संयुक्त तत्वाधान में सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के तहत एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें यातायात नियम, चालान, ग्रीन टैक्स, बीमा, प्रदूषण प्रमाण पत्र आदि की जानकारी दी गई।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर अवधेश नारायण सिंह ने बताया कि आज अधिकांश दुर्घटनाएं यातायात नियमों की जानकारी के अभाव में होती है, इन दुर्घटनाओं के शिकार ज़्यादातर लोग युवा वर्ग के होते हैं । तेज गति से वाहन चलाना, गाड़ी चलाते समय हेलमेट न पहनना, मोबाइल का प्रयोग करना तथा नशा करके गाड़ी चलाना आदि दुर्घटना के मुख्य कारण हैं। यातायात नियमों का पालन करके दुर्घटनाओं को कम किया जा सकता हैं। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप उपस्थित श्री शिवराज सिंह बिष्ट सब इंस्पेक्टर यातायात पुलिस रुद्रपुर ने बताया कि गाड़ी चलाते समय सीट बेल्ट बांधना तथा हेलमेट लगाना अत्यंत आवश्यक है। आजकल गाड़ी चलाते समय कई लोगों के ई चालान कट जाते हैं। उन्होंने बताया कि ई चालान आपके वाहन नंबर के साथ पंजीकृत मोबाइल नंबर पर एसएमएस के माध्यम से आता है, इसका समय से निस्तारण करना अत्यंत जरूरी है, अन्यथा बाद में पुलिस वाले आपकी गाड़ी और आपको पकड़ कर थाने ले जा सकते हैं। वाहन चलाते समय वाहन स्वामी गाड़ी के समस्त कागजात अपने साथ रखें, अगर नहीं रख पाते तो आप डिजिलॉकर या एम परिवहन अप के माध्यम से डिजिटल रूप में डाउनलोड करके चेकिंग के समय दिखा सकते हैं और चालान से बच सकते हैं ।

****

विकास के पायदान

- महाविद्यालय के भगत सिंह पार्क में छात्र-छात्राओं की सुविधा एवं आराम को ध्यान में रखते हुए पार्क में नई बेंचों का निर्माण कराया गया है। लंबे समय से छात्र-छात्राओं द्वारा पार्क में बैठने की पर्याप्त व्यवस्था की आवश्यकता महसूस की जा रही थी। इस आवश्यकता को देखते हुए महाविद्यालय प्रशासन ने पहल करते हुए पार्क में आकर्षक एवं मजबूत बेंचों की स्थापना करवाई है। इन बेंचों के निर्माण से छात्र-छात्राओं को अवकाश के समय अध्ययन, चर्चा तथा विश्राम के लिए एक सुविधाजनक स्थान उपलब्ध हो गया है। पार्क का वातावरण पहले की अपेक्षा अधिक व्यवस्थित एवं सुंदर दिखाई देने लगा है। महाविद्यालय छात्र संघ ने इस पहल का स्वागत करते हुए महाविद्यालय प्रशासन के प्रति आभार व्यक्त किया है।

विकास के पायदान

- महाविद्यालय परिसर की हरियाली एवं सौंदर्य को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से पार्क के चारों ओर ग्रिल की चारदीवारी तथा प्रवेश द्वार का निर्माण कराया गया है।परिसर में स्थित फूलों एवं सजावटी पौधों को आवारा पशुओं से लगातार नुकसान पहुँच रहा था, जिसके कारण उद्यान की सुंदरता प्रभावित हो रही थी। इस समस्या के समाधान हेतु महाविद्यालय प्रशासन द्वारा पार्क को सुरक्षित बनाने के लिए मजबूत ग्रिल लगाई गई तथा नियंत्रित प्रवेश के लिए गेट की व्यवस्था की गई। इस पहल के परिणामस्वरूप अब पार्क में लगे फूल-पौधे सुरक्षित रहेंगे तथा उनके संरक्षण और विकास में सहायता मिलेगी। महाविद्यालय के प्राचार्य ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण एवं परिसर के सौंदर्यीकरण को बढ़ावा देना संस्थान की प्राथमिकताओं में शामिल है। उन्होंने विद्यार्थियों से भी परिसर की स्वच्छता एवं हरियाली बनाए रखने में सहयोग करने का आह्वान किया। ग्रिल एवं गेट के निर्माण से पार्क की सुरक्षा में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने इस कार्य की सराहना करते हुए इसे परिसर की हरित धरोहर को संरक्षित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया है। महाविद्यालय छात्र संघ ने प्राचार्य को उनके इस कार्य के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया है।

विकास के पायदान

- महाविद्यालय में ग्रीष्मकालीन परीक्षाओं के दौरान विद्यार्थियों को तीव्र धूप से होने वाली असुविधा से बचाने के उद्देश्य से प्रवेश द्वार पर शेड का निर्माण कराया गया। लंबे समय से छात्र संघ द्वारा यह मांग की जा रही थी कि परीक्षा के दौरान प्रवेश द्वार पर प्रतीक्षा कर रहे विद्यार्थियों के लिए छाया की उचित व्यवस्था की जाए। छात्रों की इस आवश्यक माँग को गंभीरता से लेते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अवधेश नारायण सिंह ने परीक्षा प्रारंभ होने से पूर्व ही प्रवेश द्वार पर शेड का निर्माण सुनिश्चित कराया। शेड के निर्माण से विद्यार्थियों को धूप और गर्मी से राहत मिली है तथा प्रवेश के समय होने वाली भीड़ के बावजूद उन्हें खुले आसमान के नीचे खड़ा नहीं रहना पड़ता। परीक्षा के दिनों में जी बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं निर्धारित समय से पूर्व महाविद्यालय पहुंचते हैं। ऐसे में यह शेड उनके लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। विद्यार्थियों ने इस पहल का स्वागत करते हुए महाविद्यालय प्रशासन एवं प्राचार्य के प्रति आभार व्यक्त किया है। यह व्यवस्था न केवल विद्यार्थियों की सुविधा और स्वास्थ्य के प्रति महाविद्यालय की संवेदनशीलता को दर्शाती है, बल्कि छात्र हितों के प्रति प्रशासन की सकारात्मक सोच का भी परिचायक है। शेड निर्माण से महाविद्यालय परिसर में विद्यार्थियों के लिए अधिक अनुकूल एवं सुविधाजनक वातावरण का निर्माण हुआ है।